

1.4 Memorabilia

Mr B. Rama Rao

*former Sr PA to Director,
21.9.1994*

‘You boy!’ the foreigner, whom I later came to know as Dr HT Mahler, told me, ‘You have made a mistake. You have wrongly spelt the word pulmonary’.

I wanted to be annoyed but couldn’t, because the face was amiable. I was not interested in the job but was persuaded to consider it by our family friend, Dr Iyengar, the State BCG Officer.

I replied: ‘It is a new word for me. I am not well versed in medical words’. Why couldn’t you ask for a dictionary’?

‘Dictionary! In India we don’t ask for a dictionary in an interview’.

Both the officers had a hearty laugh. Then one of them told me: ‘Okay, from tomorrow you are hired!’

His voice now was so earnest, I couldn’t utter any other word other than nodding my head. I was unaware of who was hiring me, whether WHO or GOI and on what salary.

Though I did not understand many things they did, I knew they were available for consultations and were possessed with the idea of building up some concrete programme for our country. On every important issue, they would consult others and finally Dr PV Benjamin.

Today, after serving the Institute for 34 years, I consider that I was privileged to be hired on that day, by those two WHO officers. Where else could I have seen giants like Mahler, O’Rourke, Raj Narain, Nagpaul, working at such close quarters? Their very functioning would enthuse the staff. It is in such functioning the institute’s glory lies.

संस्करण

श्री.बी. रामराव

निदेशक के भूतपूर्व वरिष्ठ व्यक्तिगत सहायक

२१.९.१९९४

डा.एच.टी. माहलर जिन्हें मैं विदेशी समझता था, उन्होंने मुझे सम्बोधित करते हुए कहा कि ये लड़के तुमने पलमोनरी शब्द की स्पेलिंग गलत लिखकर, एक गलती की है। मैं चिढ़ने वाला था परन्तु उनके ओजस्वी चेहरे के सामने ऐसा न कर सका। यहाँ कार्य करने की इच्छा न होने के बाद भी मैं यहाँ मेरे एक परिवारिक मित्र डा. आइंगर राज्य बी.सी.जी. अधिकारी के सौजन्य से आया था। उनका दबाव डालने के कारण मैं यह इन्टरव्यू देने आया था। मेरे लिये यह एक नया शब्द है, मुझे चिकित्सीय शब्दों की जानकारी कम है, मैंने उत्तर दिया। तुम ने शब्द कोश क्यों नहीं मांगा ? शब्द कोश ! भारत में साक्षात्कार के समय शब्द कोश नहीं मांगते। दोनों अधिकारी उन्मुक्त होकर हँसे और उनमें से एक ने कहा ठीक है, तुम कल से नौकरी पर आ सकते हो। उनकी स्पष्ट वाणी के आगे मैं एक भी शब्द न बोल सका और खुशी से स्वीकृतात्मक रूप से सिर हिला दिया। मैं उस समय यह भी नहीं जानता था कि मुझे कौन नियुक्त कर रहा है, विश्व स्वास्थ्य संगठन या भारत सरकार और मेरा वेतन क्या होगा? अपने कार्यकाल के दौरान उनके साथ काम करते समय मैं उनके बहुत से कार्यों को वास्तव में समझ नहीं पाता था। परन्तु यह जानता था कि वह हमारे देश के लिए किसी महत्वपूर्ण योजना बनाने हेतु अग्रसर थे। वह सदैव परामर्श हेतु उपलब्ध रहते थे, प्रत्येक विषय पर दूसरों से विचार करते थे और अन्त में डा.पी. बेन्जामिन से विचार करते थे।

संस्थान की ३४ वर्षों तक निरन्तर सेवा करने के उपरान्त आज मैं सोचता हूँ कि यह मेरा सौभाग्य था कि उस दिन उन दोनों अधिकारियों द्वारा मुझे नौकरी दी गयी और मेरा साक्षात्कार माहलर और ओ', रुक जैसे महान हस्तियों से हो पाया। वरना ऐसा कहीं सम्भव था, कि मुझे श्री.डा.राजनारायण एवं श्री डा.नागपाल के इतने निकट रहकर कार्य करने का मौका मिलता। उनकी कार्य करने की शैली समस्त कर्मचारियों को प्रेरित करती थी। उनकी प्रभावशाली कार्यशैली के कारण ही इस संस्थान की कीर्ति स्थापित है।